फसल बेचने के प्रूफ/मंडी की रसीद न हों तो, एग्रीकल्चर इनकम कैसे साबित करें?

1. **कृषि भूमि, की उपलब्धता के कागजात लें। ताकि पता चल सके कि करदाता के पास कितनी लैंड होल्डिंग है?**

लैंड होल्डिंग के लिए कृषि भूमि की "जमाबंदी" निकलवाएं। राजस्थान में जमाबंदी "अपना खाता" पोर्टल से ऑनलाइन भी निकाली जा सकती है। अन्यथा पटवारी के पास होती है। जमाबंदी का अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग नाम है जैसे कई जगह "फर्द" बोलते हैं।

हेक्टयर व एयर

कृषि भूमि, की यूनिट आजकल हैक्टेयर व एयर चलती है। एक एयर यानि 100 वर्गमीटर। एक हैक्टेयर यानी 10 हजार वर्गमीटर या 100 एयर या 4 पक्के बीघा(राजस्थान के)।

बीघा व बिस्वा

एक पक्की बीघा में 2500 वर्गमीटर या 25 एयर या 3025 वर्ग गज होते हैं।, अर्थात 165 फीट ×165 फीट का एक चौकोर बीघा (पक्का बीघा) होता है। 1 बीघा में 20 बिस्वा होते हैं। गंगानगर साइड में जहां चकबंदी हो गई वहां "पक्का बीघा" को "किला" भी बोलते हैं।

किसानों से बात करेंगे तो वे कच्ची बीघा का नाप बताएंगे। कच्ची बीघा हर क्षेत्र की अलग होती है। इसलिए कच्ची बीघा को इग्नोर करें।

एकड़

"एकड़" की भी नाप कुछ जगह चलती है। हरियाणा में 1 "किला" 1एकड़ को बोलते हैं। एक एकड़ में 1.6 पक्का बीघा (राजस्थान वाला) होता है। अर्थात 1 एकड़ में 4840 वर्गगज होते है।

2. **"खसरा":-** रिहायशी, कॉमर्शियल, औद्योगिक भूखण्ड को "प्लाट" कहते हैं, वैसे ही कृषि भूमि के एक भूखण्ड को एक "खसरा" कहते हैं। कई खसरों से मिलकर एक खेत बनता है। हर खसरे का एक नम्बर होता है।

हर साल, हर खसरे में कौन-कौनसी फसल बोई गई। इसकी एंट्री पटवारी अपने रिकॉर्ड में करता है। इस एंट्री करने की प्रक्रिया को "गिरदावरी" कहते हैं। इस रिकॉर्ड को "खसरा गिरदावरी" बोलते हैं। पटवारी या तहसीलदार से इस खसरा गिरदावरी की नकल निकलवाते हैं, तो चार-चार साल के सेट में निकलती है।

लेकिन खसरा गिरदावरी विक्रम सम्वत में निकलती है। विक्रम सम्वत की शुरुआत ईशा से 57 साल पहले शुरू हुई थी। विक्रम सम्वत का नाम "उज्जैन" के राजा "विक्रमादित्य" के नाम पर है। विक्रमादित्य, भृतहरि के छोटे भाई थे। भृतहरि सन्यासी हो गए, तब छोटे भाई विक्रम ने राज पाट संभाला था। हम इंग्लिश कलेंडर काम में लेते हैं यह ईशा से शुरू होता है इसलिए हम इसे ईस्वी सन बोलते हैं। ईस्वी सन में 57 साल जोड़कर विक्रम सम्वत निकाला जाता है। हमारा फाइनेंसियल ईयर 1 अप्रैल से शुरू होता है। लगभग उसी समय विक्रम सम्वत भी चैत्र नवरात्रा से शुरू होता है।

उदाहरण के तौर पर हमें वित्तिय वर्ष 2015-16 की खसरा गिरदावरी चाहिए, अर्थात अप्रैल 2015 से शुरू होने वाले विक्रम सम्वत की खसरा गिरदावरी लेनी होगी। 2015 में 57 जोड़ने पर सम्वत 2072 आता है। अर्थात हमको सम्वत 2072 की खसरा गिरदावरी चाहिए।

खसरा गिरदावरी में हर खसरा नम्बर के आगे उस खसरे का क्षेत्रफल लिखा होता है और कितने क्षेत्रफल में खरीफ की कौनसी फसल बोई, रबी में कौनसी फसल बोई आजकल तीसरी फसल भी बोई जाती है। उसकी भी एंट्री मिलेगी। एक ही खसरे में खरीफ की एक से ज्यादा फसल बोई जाती हैं जैसे बाजरा, मूंग, मोठ, चोला, तिल तो सबकी एंट्री होती है। हर फसल का एरिया कल्टीवेटेड लिखा होता है।

"खरीफ" का मतलब गर्मी या बरसात या जून-जुलाई में बोई जाने वाली फसल जैसे बाजरा, कपास, मूंग, मोठ,तिल, ग्वार आदि।

"रबी" का मतलब सर्दी यानि अक्टूबर/नबम्बर में बोई जाने वाली फसल जैसे सरसों, चना, मटर, गेहूं, जौ, तारामीरा आदि

3. **प्रोडक्शन/yield:-**

खसरा गिरदावरी से यह तो साबित हो जाता है, कौनसी फसल कितने एरिया में बोई गई। लेकिन प्रोडक्शन कितना हुआ? इसका कोई रिकॉर्ड नहीं होता। इसके लिए सरकारी वेबसाइट, जिसमे डिस्ट्रिक्ट के अनुसार हर फसल के प्रोडक्शन के डेटा होते हैं या seed कम्पनीज के दावे होते हैं। जैसे हरियाणा सीड कॉर्पोरेशन, राजस्थान सीड कॉर्पोरेशन। इनकी पोर्टल से एवरेज प्रोडक्शन के डेटा मिल जाते हैं। फिर अधिकांश फसलों की MSP(सरकारी खरीद की रेट) न्यूनतम समर्थन मूल्य मिल जाता है। उससे multiply करके, कृषि उत्पादों की बिक्री निकाली जा सकती है।

4. **कौनसे साल की खसरा गिरदावरी काम मे लें?**

हमें कई बार पर्टिकुलर एक डेट पर कैश की अवेलेबिलिटी साबित करनी होती है। ध्यान रखें, उस पर्टिकुलर डेट से पहले वाले साल की खसरा गिरदावरी काम आएगी। जैसे किसी किसान ने अपने बैंक खाते में 25 अप्रैल 2014 को कैश डिपॉजिट करवाया। तो आयकर विभाग तो नोटिस 2014-15 वाले वित्तिय वर्ष का ही देगा। लेकिन वित्तिय वर्ष के पहले महीने की ही डिपाजिट है, इसलिए खसरा गिरदावरी, रेलेवेंट वित्तिय वर्ष से एक साल पुरानी चाहिए या उससे भी पुरानी। कम से कम 2014-15 वित्तिय वर्ष की खसरा गिरदावरी तो कोई काम की नहीं होगी।

5. **जलाऊ लकड़ी व चारा(फायर वुड व fodder):-**

हर फसल के साथ by प्रोडक्ट भी होता है चारा या जलाऊ लकड़ी। सरसों व कपास से जलाऊ लकड़ी। बाजरा, गेहूं, चना, ग्वार, मूंग, मोठ सबका by प्रोडक्ट चारा/fodder होता है। जिसकी भी आजकल अच्छी कीमत होती है। उसका भी मूल्यांकन करें।

6. **एग्रीकल्चर खर्चे:-**

करदाता/किसान से बात करके बिजली, डीजल, बुवाई, खाद, बीज, पेस्टिसाइड व मजदूरी, थ्रेसर चार्ज, भाड़ा आदि के खर्चे डिडक्ट करके। नेट एग्रीकल्चर इनकम निकालें।